Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Multi-Disciplinary - ISSN : 2279-0268

Continuous Issue -25 | July – September 2018

स्वच्छता और महात्मा गांधीजी

सार-संक्षेष

स्वच्छता एक प्रक्रिया नहीं है यह हररोज़ की जीवनशैली का हिस्सा है। यानी स्वच्छता एक मानव सभ्यता और संस्कृति की एक आदर्श जीवन-शैली है। महात्मा गांधीजी स्वच्छता के आग्रही थे। उन्होने स्वच्छता को अपने जीवन और कार्य में उच्च स्थान दिया था। गांधीजी जानते थे कि मनुष्य के लिए बाह्य स्वच्छता रखनी जितनी जरूरी है, उतनी ही आंतरिक स्वच्छता रखनी आवश्यक है। स्वच्छता मानवी के शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य का अभिन्न अंग हे। गांधीजी ने अपने कार्य और जीनव जीने की पद्धति से ही स्वच्छता का महत्व समजाया है। उन्होने साफ-सफाई, स्वच्छता करने या रखने की बहुतसी पद्धति को पहले समजा, प्रयोग किर्यें, अनुभव किया, लोगों के लिए लाभकारी होगी या नहीं वह पहले देखा, उसके बाद व्यवहार में उसका प्रयोग किया है। और लोगों को करने को कहा है।

गांधीजी भारत के स्वच्छता के दूत थे। उन्होने व्यक्तिगत स्वच्छता से सार्वजनिक स्वच्छता तक अपने विचार व्यक्त किए है। गांधीजी ने गांव की सफाई, अस्पृश्यता निवारण और आरोग्य के नियमो की शिक्षा को अपने रचनात्मक कार्यक्रम में स्थान दिया है। इसके साथ साथ धार्मिक स्थल की गंदगी, रेलवे के डिब्बो में अस्वच्छता, नदीया के किनारे शौच क्रिया, गांव और शहरो के दंगे रास्ते एवम् सफाई कर्मीयों की अस्वच्छ स्थिति की कडी से कडी निंदा की और इन सभी स्थितियों को दूर करने के लिये अपने कार्यकर्ता और लोगो को जागृत किया। गांधीजी ने गंदगी, अस्वच्छता, खुले मे शौच, अस्पृश्यता आदि को एक सामाजिक मुद्दा बनाकर उनको समाप्त करने के लिए स्वच्छता का आंदोलन चलाया था। गांधीजी के इस स्वच्छता आंदोलन की असर और परिणाम आज हम सब सरकार द्वारा चलायें जा रहे स्वच्छता अभियान में देख शकते है।

- **महत्व के शब्द - स्वच्छता, महात्मा गांधीजी**

*संशोधन मददनीश, आदिवासी शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान्, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद ।

पूर्वभूमिका

स्वच्छता को मानव जीवन की सभ्यता और संस्कृति में ऊंचा स्थान दिया गया है। प्राचीन काल से आधुनिक युग तक ऋषिमुनि, धर्मगुरु, समाज सुधारक और स्वच्छता के विचारकों ने मानव जीवन मैं स्वच्छता कितनी महत्वपूर्ण है वह समझाया है। स्वच्छता संस्कृति को अपने जीवन में लागू करने की समझ दी है। हमारी समाज व्यवस्था में लोगों ने ज्यादातर व्यक्तिगत जीवन में ही स्वच्छता को महत्व दिया जाता है। किंतु महात्मा गांधी एक ऐसे व्यक्ति थे की जिसने स्वच्छता को व्यक्तिगत जीवन से ऊपर उठकर व्यावहारिक और सामुदायिक जीवन में भी स्वच्छता का महत्व समझाया है और लोगों को इस रास्ते पर चलने के लिए प्रेरणा दी है। गांधीजी मानते थे कि स्वच्छता मात्र शरीर साफ करना या साफ कपड़े पहनना ही नहीं है, स्वच्छता का संबंध व्यक्तिगत तौर पर शरीर की साफ सफाई के साथ मन की शुद्धिकरण के साथ भी संबंध है।

महात्मा गांधीजी ने स्वच्छता को जीवनशैली का एक हिस्सा समझा था। इसीलिए वह दक्षिण अफ्रीका में फिनिक्स आश्रम की साफ सफाई वह स्वयं करते थे और सहकर्मी को भी अपनी सफाई स्वयं करने को कहते थे। गांधीजी ने फिनिक्स आश्रम में शौचालय स्वयं बनाया था और अपने हाथों से ही उसकी साफ सफाई करते थे। उन्होंने स्वच्छता को वैज्ञानिक तौर पर समझा था। इसीलिए गांधीजी कूड़ा कचरा और मानव मल को एक गहरे गड्ढे में डालकर उसकी खाद बनाने प्रयोग फिनिक्स आश्रम में किया था। गांधीजी स्वच्छता के आग्रही थे। इसीलिए दक्षिण अफ्रीका में भारतीय और एशियाई व्यापारी को जहां वह अपना व्यवसाय करते थे वह स्थल को गंदा ना करने और साफ सफाई रखने के लिए बार बार समझाते थे।

१९१५ में महात्मा गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत आए और सबसे पहले भारत का परिभ्रमण शुरू किया। कोलकाता और हरिद्वार के परिभ्रमण के दौरान स्वच्छता के प्रति काफी निराशाजनक स्थिति देखने को मिली। वह चिंतित और व्यथित हो गए। गांधीजी ने देखा कि लोग पवित्र धार्मिक स्थल पर या नदी के किनारे धार्मिक विधि करके फूल, सूत, गुलाल, चावल, पंचामृत आदि चीजें डालकर नदी को गंदा करते हैं, नदी में स्नान करते हैं, नदी के किनारे शौच क्रिया करते हैं यह सब देख कर गांधीजी के चित को बड़ी चोट लगी। जब गांधीजी ने गांव का परिभ्रमण किया तब गांवों में भी कच्चे रास्ते, रोड-रास्तों के किनारे गंदगी, लोगों के आंगन और घरों में अस्वच्छता, गांव के रास्तों के किनारे पर शौच क्रिया आदि स्थलो पर गंदगी की स्थिति देखने को मिली। भारत के गांव की यह स्थिति देखकर भी गांधीजी बहुत दुखी हुए और उसने सोचा कि गांव और शहर, पवित्र धार्मिक स्थल, नदिया, गांव और शहरों के रास्ते-गलियां, रेलवे के डिब्बे आदि स्वच्छ होने आवश्यक है। इसीलिए महात्मा गांधीजी ने जहां-जहां सम्मेलन या जाहरसभा की वहां उन्होंने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं, शिक्षित लोगो, शहर और गांव के लोगों को स्वच्छता के प्रति जागृत करने का काम किया। और स्वच्छता को अपने जीवन में उतारने का संदेश दिया।

गांधीजी ने स्वच्छता के साथ साथ अस्पृश्यता निवारण का भी बहुत बड़ा कार्य किया। उन्होंने अस्पृश्य लोगों की बस्ती में जाकर लोगों को साफ सफाई करना, गंदगी न फेलाना, स्वच्छता की देवों को विक्साना, अस्पृश्य लोगों के साथ भोजन करना, अस्पृश्य लोगों के बीच रहना आदि अनेक काम किए हैं। महात्मा गांधीजी ने अस्पृश्यता निवारण को अपना जीवन मंत्र बना लिया था। संपूर्ण जीवन अस्पृश्य लोगों की सेवा करते रहे। उन्होने स्वच्छता आंदोलन और अस्पृश्यता निवारण को सारे समाज की जिम्मेदारी माना। गांधीजी मानते थे कि जब तक समाज व्यवस्था में से अस्पृश्यता निवारण नहीं होगा और स्वच्छता के प्रति लोग जागृत नहीं होगे तब तक सामाजिक समरसता और स्वच्छता की मिसाल खड़ी नहीं कर पाएंगे। महात्मा गांधीजी ने ७० साल पहले स्वच्छता के प्रति की गई बातें आज भी हमें ओर सही ढंग से समझने की जरूरत है। जब तक हम सब स्वच्छता को महात्मा गांधीजी के दृष्टिकोण से नहीं समझेंगे और वैज्ञानिक तौर पर नहीं जानेंगे तब तक भारत में चलाया जा रहा स्वच्छता अभियान सफल नहीं होगा।

स्वतंत्रता, स्वच्छता और गांधीजी

“स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा महत्वपूर्ण है”- महात्मा गांधीजी

गांधीजी के इस विधान में स्वच्छता का गर्भित अर्थ छूपा है, इसलिए इस विधान को हमे गंभीरता से समजना चाहिए। भारत देश को १९४७ में अंग्रेजो की गुलामी से स्वतंत्रता मिल गई, किन्तु गंदगी, अस्वच्छता रूपी गुलामी के सामने आज भी पूरा देश “स्वच्छता अभियान” चलाकर स्वच्छता रूपी स्वतंत्रता के सामने लड

रहा है। आज हम देखते है की भारत के बहुतसे गांव और शहर की गल्लीया, महोल्ले, सडके, बाजार, नदीया, मंदिरे, जाहर स्थल आदि गंदगी के शिकार हो गये है, अस्वच्छता से भरे पडे है, बदबु फेला रहे है, गंभीर रोग उत्पन्न कर रहे है और प्राकृतिक संपदा को नुकशान कर रहे है, फिर भी देश की ज्यादातर बसती स्वच्छता के प्रति सजाग नहीं है। गांधीजी ने इस गंदगी, अस्वच्छता रूपी गुलामी को एक सदी पहले पहचान लिया था और उसकी गंभीरता को समजा था। उन्होने दक्षिण अफ्रिका और भारत में व्यक्तिगत और सार्वजनिक तौर पर सफाई और स्वच्छता की ओर सबका ध्यान खींचा था।

गांधीजी ने सार्वजनिक रूप से स्वच्छता कार्य की शरूआत दक्षिण अफ्रिका से की और उसके बाद भारत मे भी स्वच्छता के लिए बहुतसे काम किए। गांधीजी के जीवन और कार्य में स्वच्छता इस तरह एकरूप थी कि उसको याद करते ही साफ-सफाई या स्वच्छता के प्रति उनका लगाव हम सबको प्रेरणा देता है।...गांधीजी के मन स्वच्छता केवल कुडे-कचरे को साफ करना ही न था, किन्तु किसी भी चीज के उचित और किफायती उपयोग के कारण, यह कम से कम अपव्यय और सब कुछ उस तरह से इस्तेमाल करने के बाद जो कुडा-कचरा बाहर आता है वह सही जगह तक पहुंचे इस तरह के सूक्ष्म अर्थ में है...।

स्वच्छता : एक जीवन-शैली और गांधीजी

स्वच्छता मानव की एक आदर्श जीवन-शैली है, इस विचार और धारणा को भारत में अभी दृढ़ता के साथ स्थापित करने की आवश्यकता है। अभी तक हम सभी की मानसिकता यह रही है कि 'गन्दगी फैलाने वाला बड़ा और गन्दगी साफ करने वाला निम्न या छोटा है।' गांधीजी अपने हाथों से कच्चा शौचालय स्वयं साफ करते थे क्योंकि वे मानते थे कि मानव, मानव का मल उठाए यह अमानवीयता है। अपनी गन्दगी दूसरों से साफ करवाना और साफ करनेवाले को अछूत मानना स्वच्छता के प्रति हमारी विद्रूप मानसिकता नहीं तो क्या है? यह मानवता के प्रति एक बड़ा अक्षम्य अपराध है। यह ऐसी सामाजिक समस्या है जिसे गहराई से समझने की आवश्यकता है। वर्धा आश्रम में गांधीजी ने अपना शौचालय स्वयं बनाया था और उसे प्रतिदिन स्वयं साफ करते थे। इस तरह गांधीजी ने स्वच्छता को अपने जीवन का हिस्सा बनाया था।

स्वच्छता के प्रतीक हैं महात्मा गांधीजी

गांधीजी ने अपने बचपन में ही भारतीयों में स्वच्छता के प्रति उदासीनता की कमी को महसूस कर लिया था। उन्होंने किसी भी सभ्य और विकसित मानव समाज के लिए स्वच्छता के उच्च मानदंड की आवश्यकता को समझा। उनमें यह समझ पश्चिमी समाज में उनके पारंपरिक मेलजोल और अनुभव से विकसित हुई। अपने दक्षिण अफ्रीका के दिनों से लेकर भारत तक वह अपने पूरे जीवन काल में निरंतर बिना थके स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करते रहे। गांधीजी के लिए स्वच्छता एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा था। १८९५ में जब ब्रिटिश सरकार ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों और एशियाई व्यापारियों से उनके स्थानों को गंदा रखने के आधार पर भेदभाव किया था, तब से लेकर अपनी मृत्यु तक गांधीजी लगातार सफाई रखने पर जोर देते रहे।

स्वच्छता का विज्ञान और गांधीजी

गांधीजी स्वच्छता को वैज्ञानिक तौर पर समझाते हुए लिखते हैं कि - "मल चाहे सूखा हो या तरल, उसे ज्यादा-से-ज्यादा एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर ज़मीन में गाड़ दिया जाय। ज़मीन की ऊपरी सतह सूक्ष्म जीवों

से परिपूर्ण होती है और हवा एवं रोशनी की सहायता से, जो कि आसानी से वहाँ पहुँच जाती है; वहाँ जीव, मल-मूत्र को एक हफ्ते के अन्दर एक अच्छी, मुलायम और सुगन्धित मिट्टी (खाद) में बदल देते हैं।''

सोपान जोशी की पुस्तक 'जल मल थल' इस बारे में और खुलासा करती है। वह बताती है कि एक मानव शरीर एक वर्ष में ४.५६ किलो नाइट्रोजन, ०.५५ किलो फॉस्फोरस और १.२८ किलो पोटैशियम का उत्सर्जन करता है। ११५ करोड़ की भारतीय आबादी के गुणांक में यह मात्रा करीब ८० लाख टन होती है। मानव मल-मूत्र को शौचालयों में कैद करने से क्या हम हर वर्ष प्राकृतिक खाद की इतनी बड़ी मात्रा खो नहीं देंगे?

त्रिकुण्डीय प्रणाली वाले 'सेप्टिक टैंक' तथा मल-मूत्र को दो अलग-अलग खाँचों में भरकर हम 'इकोसैन' के रूप में यह मात्रा कुछ बचा जरूर सकते हैं, लेकिन यह हम कैसे भूल सकते हैं कि खुले में पड़े शौच के कम्पोस्ट में बदलने की अवधि दिनों में है और सीवेज टैंक व पाइप लाइनों में पहुँचे शौच की कम्पोस्ट में बदलने की अवधि महीनों में; क्योंकि इनमें कैद मल का सम्बन्ध मिट्टी, हवा व प्रकाश से टूट जाता है। इन्ही से सम्पर्क में बने रहने के कारण खेतों में पड़ा मानव मल आज भी हमारी बीमारी का उतना बड़ा कारण नहीं है, जितना बड़ा कि शोधन संयंत्रों के बाद हमारी नदियों में पहुँचा मानव मल।

दक्षिण अफ्रीका, सार्वजनिक स्वच्छता और गांधीजी

गांधीजी ने पहली बार स्वच्छता के मसले को दक्षिण अफ्रीका में भारतीय व्यापारियों को अपने-अपने व्यापार के स्थानों को साफ रखने के संबंध में उठाया था। भारतीय और एशियाई समुदाय की ओर से एक याचिकाकर्ता के रूप में दक्षिण अफ्रीका में दी गई एक याचिका में गांधीजी ने भारतीय व्यापारियों की स्वच्छता के प्रति उनके रवैये और व्यवहार का बचाव किया और उन्होंने सभी समुदायों से सफाई रखने के लिए लगातार अपील भी की थी। लार्ड रिपन स्वच्छता मामले में एक मुद्दे को एक याचिका में इस प्रकार उठाया गया था : १८८१ के सम्मेलन का १४वां खंड जो मूल निवासियों के साथ-साथ सभी व्यक्तियों के हितों की समान रक्षा करता है, उसमें कहा गया था कि ट्रांसवाल में भारतीय स्वच्छता का पालन नहीं करते हैं और यह कुछ लोगों द्वारा गलत धारणा के आधार पर बताया था।

गांधीजी यह स्थापित करना चाहते थे कि भारतीयों को व्यापार का लाइसेंस इस लिए नहीं दिया जा रहा था क्योंकि वह अंग्रेज व्यापारियों को कड़ी टक्कर दे रहे थे। दूसरे, उन्होंने यह तर्क भी दिया कि भारतीय व्यापारी और अन्य लोग सफाई रखने के आदी होते हैं। उन्होंने म्यूनिसिपल डॉक्टर वियेले का उदाहरण दिया, जिन्होंने भारतीयों को सफाई के प्रति सचेत और जागरूक बताया था। डॉक्टर वियेले ने भारतीयों को धूल और लापरवाही से होने वाली बीमारियों से मुक्त बताया था।

भारत में स्वच्छता और गांधीजी

१९१५ में गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत आयें। उसके बाद सबसे पहले उन्होंने भारत का भ्रमण किया। ईस भ्रमण के दौरान गांधीजी ने जो देखा और अनुभव किया उससें उनके मन-हृदय को स्तब्ध कर दिया। ईस भ्रमण की घटना को १९ नवंबर १९२५ के यंग इंडिया के अंक में गांधीजी ने भारत में स्वच्छता के बारे में अपने विचारों को लिखा। उन्होंने लिखा, 'देश के अपने भ्रमण के दौरान मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ गंदगी को देखकर हुई...इस संबंध में अपने आप से समझौता करना मेरी मजबूरी है।'

गांधीजी ने लोक सेवक संघ के संविधान मसौदे में कार्यकर्ताओं के संबंध में जो लिखा था वह इस प्रकार है- 'कार्यकर्ता को गांव की स्वच्छता और सफाई के बारे में जागरूक करना चाहिए और गांव में फैलने वाली बिमारियों को रोकने के लिए सभी जरूरी कदम उठाने चाहिए'।

भारत में गांधीजी ने गांव की स्वच्छता के संदर्भ में सार्वजनिक रूप से पहला भाषण १४ फरवरी १९१६ में मिशनरी सम्मेलन के दौरान दिया था। उन्होंने वहां कहा था 'गांव की स्वच्छता के सवाल को बहुत पहले हल कर लिया जाना चाहिए था।'

भारत में स्वच्छता परिदृश्य अभी भी निराशाजनक है। हमने गांधी को एक बार फिर विफल कर दिया है। गांधीजी ने समाजशास्त्र को समझा और स्वच्छता के महत्व को समझा। पारंपरिक तौर पर सदियों से सफाई के काम में लगे लोगों को गरिमा प्रदान करने की कोशिश की। आजादी के बाद से हमने उनके सफाई कार्यक्रम को योजनाओं में बदल दिया। योजना को लक्ष्यों, ढांचों और संख्याओं तक सीमित कर दिया गया। हमने मौलिक ढांचे और प्रणाली से 'तंत्र' पर तो ध्यान दिया और उसे मजबूत भी किया लेकिन हम 'तत्व' को भूल गए जो व्यक्ति में मूल्य स्थापित करता है।

खुले में शौच, स्वच्छता और गांधीजी

भारत देश में पारंपरिक तौर पर खुले में शौच करने की प्रथा रही है। आज भी हमारे गांवो की आधी से ज्यादा बसती खुले में शौच जाती है। आज शहरी विस्तार में भी गरीब और झोपडीयों में रहनेवाले ज्यादातर लोग जिसके पास शौचालय नहीं वे रेलवे की पट्टरी पर, गटर के नाले के पास या निर्जन जगह के आसपास खुले में शौच करते है। खुले में शौच करना ये लोगों की मजबूरी है। वर्तमान में भी बहुरसे गांव और शहर में लोगों को खुले में शौच करने जाना पडता है।

सदीयो पहले गांधीजी ने खुले में शौच करनेवाले लोगों के प्रति स्वच्छता का उपाय बताया था। गांधीजी ने कहा है कि "कोई भी परिश्रमी ग्रामवासी इतना काम तो जरुर कर सकते हैं की शौच को इकट्ठा करके इसे अपने लिए संपत्ति के रूप में परिवर्तित करें, क्योंकि आजकल यह खाद लाखों रुपयों के मूल्य का है, जो हमेशा व्यर्थ जाता है। बदले में हवा प्रदूषित होती है, इससे बीमारियां फैलती है।" गांधीजी ने स्वच्छता को अपना सार्वजनिक कर्म और धर्म माना है। उन्होंने स्वच्छता को रचनात्मक कार्यो की बुनियाद और स्वराज की लायकात कही है।

गांधीजी ने स्वच्छता कार्य को व्यक्ति, परिवार और राष्ट्र के लिए आवश्यक माना है, उन्होंने कहां है कि हर एक घर में शौचालय होना चाहिए, घर के शौचालय को गटर के साथ जोड़ना चाहिए, कचरा पेटी को नियमित साफ करना, बारिश के पानी का निकाल करना और सफाई कर्मी की व्यवस्था करना इस तरह उन्होंने स्वच्छता कार्य को लोगों के मन तक पहुंचाया था। लोगों के मन में ऐसा भाव उत्पन्न कर दिया था कि जहां स्वच्छता है वहां ईश्वर है।

धार्मिक स्थलों की स्थिति, स्वच्छता और गांधीजी

गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से १९१५ में भारत लौटे तो उन्होंने गोपालकृष्ण गोखले की सलाह पर भारत यात्रा शुरू की। इसी क्रम में वह पहले रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने कलकत्ता गये और फिर मुंशीराम से मिलने हरिद्वार चले आये। गांधीजी ने अपनी हस्तलिखित डायरी में कलकत्ता और हरिद्वार में मैला साफ करने के

लिये गड्ढे खोदने और मल को स्वयं मिट्टी से ढकने का उल्लेख किया है। गांधीजी की हरिद्वार यात्रा के बारे में उनकी हस्तलिखित डायरी के विवरण पर गौर करना भी जरूरी ही है। गांधीजी ने डायरी में लिखा है कि....''ऋषिकेश और लक्ष्मण झूले के प्राकृतिक दृष्य मुझे बहुत पसन्द आये।.....परन्तु दूसरी ओर मनुष्य की कृति को वहां देख चित्त को शांति न हुयी। हरिद्वार की तरह ऋषिकेश में भी लोग रास्तों को और गंगा के सुन्दर किनारों को गन्दा कर डालते थे। गंगा के पवित्र पानी को बिगाड़ते हुये उन्हें कुछ संकोच न होता था। दिशा-जंगल जाने वाले आम जगह और रास्तों पर ही बैठ जाते थे, यह देख कर मेरे चित्त को बड़ी चोट पहुंची.....।

आज भी धर्म के नाम पर गंगा की भव्य और निर्मल धार गंदी की जाती है। गंगा तट पर, जहां पर ईश्वर-दर्शन के लिये ध्यान लगा कर बैठना शोभा देता है, पाखाना-पेशाब करते हुये असंख्य स्त्री-पुरुष अपनी मूढ़ता और आरोग्य के तथा धर्म के नियमों को भंग करते हैं। तमाम धर्म-शास्त्रों में नदियों की धारा, नदी-तट, आम सड़क और यातायात के दूसरे सब मार्गों को गंदा करने की मनाई है। विज्ञान शास्त्र हमें सिखाता है कि मनुष्य के मलमूत्रादि का नियमानुसार उपयोग करने से अच्छी से अच्छी खाद बनती है। आरोग्यशास्त्र कहता हैं कि उक्त स्थानों में मल-मूत्रादि का विसर्जन करना मानव-समाज की घोर अवज्ञा करना है। यह तो हुयी प्रमाद और अज्ञान के कारण फैलने वाली गंदगी की बात। धर्म के नाम पर जो गंगा-जल बिगाड़ा जाता है, सो तो जुदा ही है। ....विधिवत् पूजा करने के लिये मुजे हरद्वार में एक नियत स्थान पर ले जाया गया। जिस पानी को लाखों लोग पवित्र समझ कर पीते हैं उसमें फूल, सूत, गुलाल, चावल, पंचामृत वगैरा चीजें डाली गयीं। जब मैंने इसका विरोध किया तो उत्तर मिला कि यह तो सनातन् से चली आयी एक प्रथा है। इसके सिवा मैंने यह भी सुना कि शहर के गटरों का गंदा पानी भी नदी में ही बहा दिया जाता है, जो कि एक बड़े से बड़ा अपराध है.....।

गांधीजी ने धार्मिक स्थलों में फैली गंदगी की ओर भी ध्यान दिलाया था। ३ नवंबर १९१७ को गुजरात राजनैतिक सम्मेलन में उन्होंने कहा था, 'पवित्र तीर्थ स्थान डाकोर यहां से बहुत दूर नहीं है। मैं वहां गया था। वहां की पवित्रता की कोई सीमा नहीं है। मैं स्वयं को वैष्णव भक्त मानता हूं, इसलिए मैं डाकोर की स्थिति की विशेष रूप से आलोचना कर सकता हूं। उस स्थान पर गंदगी की ऐसी स्थिति है कि स्वच्छ वातावरण में रहने वाला कोई व्यक्ति वहां २४ घंटे तक भी नहीं ठहर सकता। तीर्थ यात्रियों ने वहां के टैंकरों और गलियों को प्रदूषित कर दिया है।' इसी तरह यंग इंडिया में ३ फरवरी १९२७ को उन्होंने बिहार के पवित्र शहर 'गया' की गंदगी के बारे में भी लिखा और यह इंगित किया कि उनकी हिन्दू आत्मा 'गया' के गंदे नालों में फैली गंदगी और बदबू के खिलाफ बगावत करती है।

दर असल गांधीजी के मन में मैले से खाद बनाने का विचार १९०८ में तब आया था जब वह दक्षिण अफ्रीका में टॉलस्टॉय फार्म पर रहते थे। वैसे भी यूरोपीय देशों में मलव्ययन में सफाईकर्मी की व्यवस्था तो थी मगर 'नाइट स्वायल' के तौर पर उसका उपयोग खाद के रूप में करने का प्रचलन भी वहां था। भारत को स्वच्छ बनाने के लिये केवल गांधी के चश्मे के ढांचे से काम चलने वाला नहीं है। इसके लिये गांधी की सोच पर सम्पूर्णता से विचार किये जाने की जरूरत है।

रेलवे के डिब्बे, स्वच्छता और गांधीजी

गांधीजी ने रेलवे के तीसरे श्रेणी के डिब्बे में बैठकर देशभर में व्यापक दौरे किए थे। वह भारतीय रेलवे के तीसरे श्रेणी के डिब्बे की गंदगी से स्तब्ध और भयभीत थे। उन्होंने समाचार पत्रों को लिखे पत्र के माध्यम से इस ओर सबका ध्यान खिस्सा था। उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा है, 'इस तरह की संकट की स्थिति में तो यात्री परिवहन को बंद कर देना चाहिए लेकिन जिस तरह की गंदगी और स्थिति इन डिब्बों में है उसे जारी नहीं रहने दिया जा सकता क्योंकि वह हमारे स्वास्थ्य और नैतिकता को प्रभावित करती है। निश्चित तौर पर तीसरी श्रेणी के यात्री को जीवन की बुनियादी जरूरतें हासिल करने का अधिकार तो है ही। तीसरे दर्जे के यात्री की उपेक्षा कर हम लाखों लोगों को व्यवस्था, स्वच्छता, शालीन जीवन की शिक्षा देने, सादगी और स्वच्छता की आदतें विकसित करने का बेहतरीन मौका गवां रहे हैं।'

भारतीय रेलवे में आज भी गंदगी की वही स्थिति है। रेलवे के डिब्बों को और शौचालय साफ रखने के लिए श्रमिकों और कर्मचारियों को तो रखा जाता है, जहां तक स्वच्छता और सफाई से संबंधित प्रश्न है हम भारतीय यात्रियों को इस बारे में कोई शर्म महसूस नहीं होती। शौचालयों का सही तरीके से इस्तेमाल नहीं किया जाता। यहां तक कि वातानुकूलित डिब्बों में यात्रा करने वाले पढ़े लिखे लोग भी अपने बच्चों को शौचालय सीट का इस्तेमाल नहीं करवा कर उन्हें बाहर ही शौच करवाते हैं। डिब्बों में कूड़ा फैलना तो आम बात है।

गांव की सफाई और गांधीजी

गांधीजी को गांवो से बहुत लगाव था। वह अपने गांवो के दौरे के समय लोगो को मिलने के साथ साथ गांव की स्थिति को समज ने का प्रयास करते थे। गांधीजी ने गांवो की मुलाकात के दौरान बहुतसे घरो में गन्दगी, आंगन में सफाई का अभाव, व्यक्तिगत अस्वच्छता, रास्ते पर कुडा-कचरा, सडक और नदी के किनारे शौच, सामाजिक बदिया और गांवो की निम्न स्थिति देखने को मिलती थी। गांधीजी गांवो की एसी दयनीय स्थिति देखकर बहुत पीडा मेहसुस करते थे। यह स्थिति को सुधारने के लिए गांधीजी ने गांव की सफाई को रचनात्मक कार्यक्रम मे स्थान दिया था।

गांधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रम मे गांव की सफाई के बारे मे लिखा है कि "श्रम और बुद्धि के बीच जो अलगाव हो गया है, उसके कारण हम अपने गांव के प्रति इतने लापरवाह हो गयें हैं कि वह एक गुना ही माना जा सकता है। नतीजा यह हुआ है कि देश में जगह-जगह सुहावने और मनभाव ने छोटे-छोटे गांव के बदले हमें धूरे जैसे गांव देखने को मिलते हैं। बहुत से या यों कहिए कि करीब-करीब सभी गावों में घूमते समय जो अनुभव होता है, उससे दिल को खुशी नहीं होती।"

महात्मा गांधीजी ने कहा है कि "स्वच्छता के प्रति हमारे विचारों में सामूहिक जिम्मेवारी का अभाव रहा है। हम अपने घर का कूड़ा दूसरों के आंगन में फेंकने में संकोच नहीं रखते, इसलिए हम रास्ते पर खुले पांव चल नहीं सकते, रास्ते कूड़ा, गोबर से भरे हुए होते हैं। गांव में तालाब नदी का पानी भी शुद्ध नहीं होता।" गांव में जिस तरह गंदगी का माहौल है उसकी महात्मा गांधीजी ने निंदा की है और उसन् कहा कि "गांव की बाहर और आसपास इतनी गंदगी है कि गांव में जाते वक्त आंख बंद करके, नाक दबा कर जाना पड़ता है।"

गांधीजी कहते की "ज्यादातर कांग्रेसी गांव के बाशिंदे होने चाहिए, अगर ऐसा हो तो उनका फर्ज है कि वे अपने गांवों को सब तरह से सफाई के नमूने रूप बनायें। लेकिन गांववालों के हमेशा के यानी रोज-रोज के

जीवन में शरीफ होने या उसके साथ घुलने-मिलने को उन्होंने कभी अपना कर्तव्य माना ही नहीं, हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाई को न तो जरूरी गुण माना और न उसका विकास किया। ये रिवाज के कारण हम अपने ढंग से नहा-भर लेते हैं, मगर जिस नदी, तालाब या कुएँ के किनारे हम श्राध्द या वैसी ही दूसरी कोई धार्मिक क्रिया करते हैं, और जिन जलाशयों में पवित्र होने के विचार से हम नहाते हैं, उनके पानी को बिगाड़ ने या गंदा करने में हमें कोई हिचक नहीं होती। हमारी इस कमजोरी को मैं एक बड़ा दुर्गुण मानता हूं। इस दुर्गुण का ही यह नतीजा है कि हमारे गांवो की और हमारी पवित्र नदियों की पवित्र टतों की लज्जाजलक दुर्दशा और गंदगी से पैदा होने वाली बीमारियां हमें भोगनी पड़ती है।"

अस्पृश्यता-निवारण, स्वच्छता और गांधीजी

गांधीजी अस्पृश्यता को हिंदू धर्म का कलंक मानते थे और उसके प्रति उसको धृणा थी। गांधीजी ने ज्ञाति व्यवस्था में सबसे निम्न कहे जानेवाले लोगों यानी अस्पृश्य लोगों को सम्मान दर्जा और गौरव दिलाने के लिए बहुत चिंतन और काम किया है। अस्पृश्य लोगों के बीच जाना, अस्पृश्य लोगों की बस्ती में सफाई कार्यक्रम चलाना, सफाई और स्वच्छता की टेवो के प्रति जागरुक करना, अस्पृश्य लोगों के साथ भोजन लेना आदि अनेक काम किए हैं। गांधीजी ने अस्पृश्यता निवारण को अपना जीवनमंत्र बना लिया था।

आज हमें उनके प्रति किए गए पाप के बदले अंतःकरणपूर्वक पश्चाताप करना चाहिए। अस्पृश्यता समाप्त कर एकात्म और एकसमान समाज का निर्माण करना गांधीजी का ध्येय था। गांधीजी अपने को भंगी, कातने वाला, बुनकर और मजदूर कहते थे। वे स्वेच्छा से भंगी बने थे। अस्पृश्यता-निवारण का प्रयत्न उनके जीवन का अभिन्न अंग था। इस काम के लिए प्राण अर्पण करने तक वे तैयार थे। वे पुनर्जन्म नहीं चाहते थे, परंतु पुनर्जन्म हो तो उनकी इच्छा थी कि अस्पृश्य का ही हो।

अस्पृश्यता निवारण करने का अर्थ है अखिल विश्व पर प्रेम करना और उसकी सेवा करना। यह अहिंसा का ही एक अंग है। अस्पृश्यता समाप्त करने का मतलब है मानव समाज की भेदभाव की दीवारों को गिरा देना, इतना ही नहीं, जीवनमात्र की ऊंच-नीच को समाप्त करना। अस्पृश्यता हिंदू धर्म का कलंक है। अस्पृश्यता मानना कथित स्पृश्य लोगों का महापातक है। अस्पृश्यता के खिलाफ मेरी लड़ाई (संघर्ष) अखिल मानवजाति की अशुद्धि से है। कोई भी भंगी जिस दिन राष्ट्रसभा का कारोबार संभालेगा, तब मुझे सच्चा आनंद होगा।'

सफाई कर्मी, स्वच्छता और गांधीजी

गांधीजी को अस्पृश्यता से घृणा थी। बचपन से बालक मोहन के मन में अपनी मां के प्रति स्नेह सम्मान होने के बावजूद उस छोटी आयु में भी अपनी मां की उस बात का विरोध किया जब उनकी मां ने सफाई करनेवाले कर्मचारी के न छूने और उससे दूर रहने के लिए कहा था। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि स्वच्छता और सफाई प्रत्येक व्यक्ति का कर्म है। वह हाथ से मैला ढोने और किसी एक जाति के लोगों द्वारा ही सफाई करने की प्रथा को समाप्त करना चाहते थे।

गांधीजी ने भारतीय समाज में सफाई करने और मैला ढोनेवालों द्वारा किए जानेवाले अमानवीय कार्य पर तीखी टिप्पणी की उन्होंने कहा, 'हरिजनों में गरीब सफाई करनेवाला या 'भंगी' समाज में सबसे नीचे खड़ा है जबकि वह सबसे महत्वपूर्ण है। अपरिहार्य होने के नाते समाज में उसका सम्मान होना चाहिए 'भंगी' जो समाज

की गंदगी साफ करता है उसका स्थान मां की तरह होता है। जो काम एक भंगी दूसरे लोगों की गंदगी साफ करने के लिए करता है वह काम अगर अन्य लोग भी करते तो यह बुराई कब की समाप्त हो जाती।'

महात्मा गांधीजी भी अछूतों के प्रति सद्भाव और समानता के मूल्यों को स्वीकार किया है उन्होंने १८९७ में डरबन में पैखाना सफाई का काम खुशी से स्वीकार किया था। उन्होंने १९०७ में इंडियन ओपिनियन में लिखा था कि "भारत में हमारे में से कुछ लोग सफाई श्रमिक पर अत्याचार करते हैं, उन्हें मजबूर करते हैं।" सफाई श्रमिकों के प्रति हमेशा उनकी संवेदना थी। १९२० में गांधीजी ने कहा था कि "हम तब तक स्वराज प्राप्त करने में लाइक नहीं होंगे जब तक हमारी आबादी के पांचवें हिस्से को बंधक बनाए रखें है।"

गांधीजी का झाड़ू (सफाई कार्यक्रम)- सामाजिक क्रांति से सामाजिक समरसता

'झाड़ू' गांधीजी की सामाजिक विषमता तथा जात-पात पर आधारित ऊंच-नीच की भावना समाप्त करनेवाली सामाजिक क्रांति का प्रतीक था। वैसे भी क्रांति का अंकगणित नहीं होता, 'प्रतीक' होते हैं। झाड़ू या सफाई का कार्यक्रम जाति या वर्ग निवारण का भी प्रतीक था। गांधीजी की ईस क्रांति के पीछे भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व भावना निर्माण करना था। जो धर्म, भाषा, प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव के परे होने की भावना थी। सफाई कामदार को तो आज पीने के लिए स्वच्छ पानी भी नसीब नहीं होता। जिनके मन 'स्वच्छ' नहीं होंगे, उनके लिए यह 'स्वच्छता अभियान' गांधी के क्रांति के प्रतीक झाड़ू की जगह नहीं ले पाएगा।

विसंगति और विरोधाभासी जात-पात पर आधारित सामाजिक विषमता जब तक समाप्त नहीं होगी, तब तक यह गांधीजी का सफाई कार्यक्रम 'प्राणदायी' नहीं बनेगा। इस कार्यक्रम को "एकला चलो रे" की घोषणा भी स्वागत योग्य है। गांधीजी भी व्यक्तिगत चारित्र्य और व्यवहार पर जोर देते थे।

सफाई में विश्वास रखनेवालों को स्पष्ट करना होगा कि वे जातिभेद या वर्गभेद पर आधारित विषमता को अपने निजी जीवन में स्थान नहीं देंगे और न ही उसमें शामिल होंगे। साथ ही "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है"माननेवाले गांधीजी की विचारधारा और जीवन प्रणाली का निजी तथा सार्वजनिक जीवन में पालन करेंगे। वे लोग उन मंदिरों में नहीं जाएंगे, जहां स्त्री और दलित को प्रवेश नहीं है। गांधीजी स्वयं उस विवाह समारोह में भी हाजिर नहीं रहते थे, जिसमें शादी का एक पक्ष हरिजन न हो। इसीलिए वे महादेवभाई देसाई के पुत्र नारायणभाई के विवाह में उपस्थित नहीं हुए। सफाई कार्यक्रम जब मन की शुद्धि और हरिजन सेवा का कार्यक्रम बनेगा, तभी तो 'मन शुद्ध' होगा और स्वच्छ मन से स्वच्छता के कार्यक्रम में शरीफ होने का अधिकार प्राप्त होगा।

गांधीजी मानते थे कि जब सफाई कर्मचारियों के हाथ में भागवद् गीता और ब्राह्मणों के हाथ में झाड़ू आएगा, तब अस्पृश्यता मिटकर सामाजिक समता निर्मित होगी।

आरोग्य के नियमों की शिक्षा, स्वच्छता और गांधीजी

गांधीजी की पुस्तक "रचनात्मक कार्यक्रम: उसका रहस्य और स्थान" में आरोग्य के नियमों की शिक्षा के बारे में लिखा है। गांधीजी ने लिखा है कि "गांव की सफाई का जिक्र करने से इसमें तंदुरस्ती के नियमों की तालीम का जिक्र नहीं आता। अपने शरीर की हिफाजत करना और तंदुरुस्ती के नियमों को जानना एक अलग ही विषय है, इसका संबंध अभ्यास से और अभ्यास द्वारा प्राप्त ज्ञान के आचरण से है। जो समाज

सुव्यवस्थित है, इसमें रहनेवाले सभी लोग-नागरिक-तंदुरस्ती के नियमों को जानते हैं और उन पर अमल करते हैं। अब तो यह बात निर्विवाद सिद्ध हो चुकी है कि तंदुरुस्ती के नियमों को न जानने से और उन नियमों के पालन में लापरवाह रहने से ही मनुष्य जाति का जिन जिन रोंगो से परिचय हुआ है उनमें से ज्यादातर रोंग उससे होते हैं। बेशक, हमारे देश की दूसरे देशों से बढी-चढी मृत्युसंख्या का ज्यादातर कारण गरीबी है, जो हमारे देशवासियों के शरीर को कुरेदकर खा रही है, लेकिन अगर उसको तंदुरस्ती के नियमों की ठीक-ठाक तालीम दी जाए, तो इसमें बहुत कमी की जा सकती है।"

गांधीजी ने कहा कि "मनुष्य जाति के लिए साधारणतः स्वास्थ्य का पहला नियम यह है कि मन चंगा है तो शरीर भी चंगा है। निरोगी शरीर में निर्विकार मन का वास होता है, यह एक स्वयंसिद्ध सच्चाई है। मन और शरीर के बीच अटूट संबंध है।....तंदुरस्ती के फायदे और आरोग्य शास्त्र के नियम बिल्कुल सरल और साधे हैं और आसानी से सीखें जा सकते हैं मगर उन पर अमल करना बहुत मुश्किल है....."

गांधीजी कहते है कि "आप जो पानी पियें, जो खाना खायें और जिस हवा में साँस लें, वह बस बिल्कुल साफ होने चाहिए। आप सिर्फ अपनी निज की सफाई से संतोष न मानें, बल्कि हवा, पानी और खुराक की जितनी सफाई आप अपने लिए रखें, उतनी ही सफाई का शौक आप अपने आसपास के वातावरण में भी फैलायें।"

पंचायत की भूमिका, स्वच्छता और गांधीजी

पंचायतों की भूमिका के बारे मे गांधीजी ने कहा, 'गांव में रहने वाले प्रत्येक बच्चे, पुरुष या स्त्री की प्राथमिक शिक्षा के लिए, घर-घर में चरखा पहुंचाने के लिए, संगठित रूप से सफाई और स्वच्छता के लिए पंचायत जिम्मेदार होनी चाहिए।'

महात्मा गांधीने स्वच्छता को बहुत उपयोगी माना है। उन्होंने कहा है कि "मैं मानता हूं कि जिस जगह पर शरीर सफाई, घर सफाई, ग्राम सफाई है वहां पर बहुत कम बीमारी होती है, ग्रामवासी इतनी बात समझते हैं तो उन्हें वैद्य, हकीम और डाक्टर की जरूरत नहीं होती।" गांधीजी मानते थे कि जिस व्यक्ति स्वच्छता के प्रति जागरुक नहीं है उसे तो जरूर शर्म आनी चाहिए।

नगरपालिका की जिम्मेदारी, स्वच्छता और गांधीजी

गांधीजी भारतीय लोगों की साफ-सफाई कम रखने की आदतों से भी परिचित थे। इसलिए उन्होंने १९१४ तक अपने २० वर्षों के प्रवास के दौरान साफ-सफाई रखने पर विशेष बल दिया। गांधीजी इस बात को समझते थे कि किसी भी इलाके में बहुत अधिक भीड़भाड़ गंदगी की एक मुख्य वजह होती है।

गांधीजी ने स्वच्छता के सबसे बड़े दूत थे। उन्होंने एक बार कहा था 'जिस नगर में साफ संडास नहीं हों और सड़कें तथा गलियां चौबीसों घंटे साफ नहीं रहती हों, वहां की नगरपालिका इस काबिल नहीं है कि उसे चलने दिया जाए। नगरपालिकाओं की सबसे बड़ी समस्या गंदगी है।' महात्मा गांधी रोजाना सुबह चार बजे उठकर स्वयम् आश्रम की सफाई किया करते थे।

दक्षिण अफ्रीका के कुछ शहरों में विशेष इलाकों में भारतीय समुदाय के लोगों को पर्याप्त जगह और ढांचागत सुविधाएं नहीं मुहैया कराई गई थी। गांधीजी मानते थे कि उचित स्थान, मूलभूत और ढांचागत

सुविधाएं और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी नगरपालिका की है। गांधीजी ने इस संबंध में जोहांसबर्ग के चिकित्सा अधिकारी को एक पत्र में लिखा था की 'मैं आपको भारतीयों के रहनेवाले इलाकों की स्तब्ध कर देनेवाली स्थिति के बारे में लिख रहा हूं। एक कमरे में कई लोग एक साथ इस तरह ठूंस ठूंस कर रहते हैं कि उनके बारे में बताना भी मुश्किल है। इन इलाकों में सफाई सेवाएं अनियमित हैं और सफाई न रखने के संबंध में बहुत से निवासियों ने मेरे कार्यालय में शिकायत करके बताया है कि अब स्थिति पहले से भी बदतर हो गई है।'

गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा था, 'नगरपालिका की आपराधिक लापारवाही और सफाई के प्रति भारतीय निवासियों की अज्ञानता की वजह से कई इलाकों को पूरी तरह गंदा रखने की साजिश रची गई थी।' एक बार दक्षिण अफ्रीका में काले प्लेग का प्रकोप फैला। सौभाग्य से उसके लिए भारतीय जिम्मेदार नहीं थे। यह जोहांसबर्ग के आस-पास के क्षेत्र में सोने की खादानोंवाले इलाके में फैला था। गांधीजी ने अपनी पूरी शक्ति के साथ, स्वेच्छा से और स्वयं के जीवन को खतरे में डालकर रोगियों की सेवा की। नगर चिकित्सक और अधिकारियों ने गांधीजी की सेवाओं की बहुत तारीफ की। गांधीजी चाहते थे कि लोग उस घटना से सबक लें। उन्होंने लिखा है कि 'इस तरह के कठोर नियमों पर निस्संदेह हमें गुस्सा आता है। परंतु हमें इन नियमों का मानना चाहिए क्योंकि इससे हम गलती दोहराएगें नहीं। हमें स्वच्छता और सफाई का मूल्य पता होना चाहिए...गंदगी को हमें अपने बीच से हटाना होगा...क्या स्वच्छता स्वयं ईनाम नहीं है? हाल ही में जो घटना हुई है यह हमारे देशवासियों के लिए एक सबक है।'

स्वच्छता शिक्षा और गांधीजी

गांधीजी ने हमें बताया कि हमें पश्चिमी देशों में सफाई रखने के तरीकों को सीखना चाहिए और उनका उसी तरह पालन करना चाहिए। २१ दिसंबर १९२४ को बेलगांव में अपने नागरिक अभिनंदन के जवाब में उन्होंने कहा था, 'हमें पश्चिम में नगरपालिकाओं द्वारा की जानेवाली सफाई व्यवस्था से सीख लेनी चाहिए...पश्चिमी देशों ने कोरपोरेट स्वच्छता और सफाई विज्ञान किस तरह विकसित किया है उससे हमें काफी कुछ सीखना चाहिए...पीने के पानी के स्रोतों की उपेक्षा जैसे अपराध को रोकना होगा...'

गांधीजी ने स्वच्छता के लिए शिक्षा के पक्ष में स्पष्ट रुख ले लिया। १९३३ में उन्होंने लिखा, 'शिक्षा देने के लिए तीन आर (reading, writing and arithmetic) का ही ज्ञान होना काफी नहीं है। हरिजन मानवता के लिए अन्य चीजों का भी अर्थ होता है। शिष्टाचार और स्वच्छता का तीनों आर की शिक्षा से पहले अपरिहार्य है।'

उन्होंने फिर १९३५ में स्वच्छता की सीख देने का प्रयास किया और तीन आर की चिंता किए बिना लोगों को सफाई के प्रति जागरूक किया। उन्होंने 'हरिजन' के एक अंक में लिखा भी था कि सफाई और स्वच्छता के मामले में 'तीन आर' का मतलब सिर्फ कहने भर के लिए ही है। वास्तव में उसका कोई महत्व नहीं है।

कार्यकताओं में स्वच्छता के प्रति जागरुक्ता और गांधीजी

कांग्रेस के करीब-करीब हर सम्मेलन में दिये अपने भाषण में गांधीजी ने स्वच्छता के मामले को उठाया। अप्रैल १९२४ में उन्होंने दाहोद शहर के कांग्रेस सदस्यों को अच्छी साफ-सफाई रखने के लिए बधाई दी और उन्हें

सुझाव दिया कि वह अछूत समझे जानेवाले समुदाय के इलाकों में जाएं और उनमें स्वच्छता के प्रति जागरूकता जगाएं। उन्होंने उसी तरह १९२५ में कानपुर कांग्रेस में सफाई रखने के इंतजामों की भी बहुत प्रशंसा की थी।

गांधीजी मानते थे कि नगरपालिका का सबसे महत्वपूर्ण कार्य सफाई रखना है। उन्होंने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को पार्षद बनने के बाद स्वच्छता के काम करने का सुझाव दिया। गांधीजी मानते थे कि अस्वच्छता बुराई है। २५ अगस्त १९२५ को कलकत्ता में दिए गए भाषण में उन्होंने कहा, 'वह (कार्यकर्ता) गांव के धर्मगुरु या नेता के रूप में लोगों के सामने न आएं बल्कि अपने हाथ में झाड़ू लेकर आएं। गंदगी, गरीबी जैसी बुराइयों का सामना करना होगा और उससे झाड़ू कुनैन की गोली और अरंडी के तेल साथ लड़ना होगा...'

गांधीजी नील की खेती करनेवाले किसानों की समस्याओं को सुलझाने के लिए चंपारण गए थे। जांच दल के रूप में तैनात एक गोपनीय पत्र में उन्होंने उस स्थिति में स्वच्छता की महत्ता को बताया। गांधीजी चाहते थे कि अंग्रेज प्रशासन अपने कार्यकताओं को स्वीकारें ताकि वे समाज में शिक्षा और सफाई के कार्यों को भी शुरू कर सकें। इस बारे में उन्होंने कहा, 'क्योंकि वे गांवों में ही रहते हैं, इसलिए वे गांव के लड़के और लड़कियों को सिखा सकते हैं और वे स्वच्छता के बारे में उन्हें जानकारी भी दे सकते हैं।'

स्कूली और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में स्वच्छता का समावेश और गांधीजी

गांधीजी ने स्कूली और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में स्वच्छता को तुरंत शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया था। २० मार्च १९१६ को गुरुकुल कांगड़ी में दिए गए भाषण में उन्होंने कहा था 'गुरुकुल के बच्चों के लिए स्वच्छता और सफाई के नियमों के ज्ञान के साथ ही उनका पालन करना भी प्रशिक्षण का एक अभिन्न हिस्सा होना चाहिए,... इन अदम्य स्वच्छता निरीक्षकों ने हमें लगातार चेतावनी दी कि स्वच्छता के संबंध में सब कुछ ठीक नहीं है... मुझे लग रहा है कि स्वच्छता पर आगन्तुकों के लिए वार्षिक व्यावहारिक सबक देने के सुनहरे मौके को हमने खो दिया।'

आश्रमी जीवन पद्धति, स्वच्छता और गांधीजी

गांधीजी ने अपने कार्यकाल के दौरान चार आश्रम यानी फीनिक्स आश्रम (दक्षिण आफ्रिका), कोचरब आश्रम (गुजरात), साबरमती आश्रम (गुजरात) और सेवाग्राम आश्रम (महाराष्ट्र) की स्थापना की। ईन चारो आश्रमो में आश्रमी जीवन पद्धति के साथ गांधीजी ने स्वच्छता को महत्वपूर्ण स्थान दिया था। कई लोगों ने गांधीजी को पत्र लिखकर आश्रम में उनके साथ रहने की इच्छा जाहिर की थी। इस बारे में उनकी पहली शर्त होती थी कि आश्रम में रहनेवालों को आश्रम की सफाई का काम करना होगा, जिसमें शौच का वैज्ञानिक ढंग से निस्तारण करना भी शामिल है। ईस प्रकार के विचार और कार्य से गांधीजी ने हमारा ध्यान स्वच्छता की ओर खींचा।

गांधीजी ने १९२० में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की। यह विद्यापीठ आश्रम की जीवन पद्धति पर आधारित था, इसलिए वहां शिक्षकों, छात्रों और अन्य स्वयं सेवकों और कार्यकर्ताओं को प्रारंभ से ही स्वच्छता के कार्य में लगाया जाता था। यहां के रिहायशी क्वार्टरों, गलियों, कार्यालयों, कार्यस्थलों और परिसरों की सफाई

दिनचर्या का हिस्सा था। गांधीजी आश्रम और विद्यापीठ आनेवाले हर नये व्यक्ति को अपने जीवन में स्वच्छता का महत्व विशेष रुप से समझते थे। यह प्रथा आज भी अस्तित्व में है।

पर्यावरणीय प्रदुषण, स्वच्छता और गांधीजी

आज भारत और विश्व में मानवी की उपभोक्तावादी जीवनशैली के कारण पर्यावरण के प्राकृतिक अंग को बहुत बडा नुकसान पहुचा है। आज ये उपभोक्तावादी जीवनशैली के कारण जल, हवा, जमीन आदि पर्यावरण के अंगों को काफी प्रदूषित कर दिया है। सामान्य तौर पर प्रदूषित करने का मतलब अस्वच्छ करना ही है। आज जल, हवा, जमीन की स्थिति इतनी बदतर हो गई है कि वह उपयोग करने के लायक कम रही हैं और जहां मजबूरी में जल, हवा, जमीन का उपयोग किया जाता है या करना पड़ता है वहा मनुष्य में बहुतसी गंभीर बीमारियां देखने को मिलती है।

गाँधीजी के एकादश व्रत भी एक तरह से मानव और पर्यावरण के संरक्षण और समृद्धि के ही व्रत है। गाँधीजी ने पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के संदर्भ में कहा हैं कि, "प्रकृति हरेक की जरूरत पूरी कर सकती है, लेकिन लालच एक व्यक्ति का भी नहीं।'' प्रकृति ही मानवी की सब जरूरते पूर्ण करती है, किन्तु मानवी की लालच या उपभोग की जीनवशैली से जो कुडा-कचरा, गन्दगी, इलेक्ट्रोनिक वेस्ट और प्रदुषण पेदा हुवा है उससे समाज में अनेक प्रकार की गंभीर बिमारी पेदा हुई है। गाँधीजी ने पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के प्रति जो कहा है उसे विश्व के सभी देशो को उचित तौर पर समजना होगा।

गांधीजी ने पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के संदर्भ में एक दृष्टांत देकर सेवाग्राम के संचालकों से कहना चाहते है - "खजूरी, गरीबों का वृक्ष है। उसके उपयोग तुम्हें क्या बताऊँ। अगर सब खजूरी कट जाये, तो सेवाग्राम का जीवन बदल जाएगा। खजूरी हमारे जीवन में ओतप्रोत है।....खजूरी के उपयोग का हिसाब करो।'' महात्मा गाँधीजी खजूरी जैसे सहज उपलब्ध वृक्ष की भी चिंता रहती थी। पर्यावरण और स्वच्छता के उनके सिद्धान्तों को लिखकर या पढ़कर नहीं, बल्कि आदत बनाकर ही जिन्दा रखा जा सकता है।

समापन

आज गांधीजी के स्वच्छता के विचार समझना आवश्यक ही नहीं, किंतु अनिवार्य हो गया है। हमने गंदगी, अस्वच्छता, प्रदूषण आदि को दूर करने के लिए व्यक्तिगत, व्यावहारिक और टेक्नोलॉजी के बहुतसे उपाय अजमाये हैं, फिर भी हमारे गांव और शहरे में जितनी स्वच्छता होनी चाहिए, उतनी स्वच्छता दिखाई नहीं देती है। इसका मतलब यह है कि हमे गांधीजी के स्वच्छता के विचारों पर गंभीरता से चिन्तन करना चाहिए। गांधीजी ने जीस तरह स्वच्छता को अपने कार्य और जीवन के साथ जोड़ दिया था उसी तरह हमे भी स्वच्छता को हमारे कार्य और जीवन के साथ जोड़ना होगा, तब ही हम महात्मा गांधीजी के स्वच्छता आंदोलन को परिणाम में बदल पायेगें।

संदर्भसूचि

पुस्तक

I. गाँधीजी. (१९४७). सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा. अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर।

II. गाँधी, एम. के. (१९४८). आरोग्य की कुंजी. अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर।

III. गाँधीजी. (१९६८). दक्षिण आफ्रिका के सत्याग्रह का इतिहास. अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर।

IV. गाँधीजी. (२०१४). रचनात्मक कार्यक्रम: उसका रहस्य और स्थान. अहमदाबादः नवजीवन प्रकाशन मंदिर।

V. जोशी, एस. (२०१६). जल थल मल. दिल्लीः गाँधी शांति प्रतिष्ठान।

VI. स्वामीनाथन. (१९६९). सम्पूर्ण गांधी वाड्मय. दिल्लीः प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

VII. वाधेला, ए.स.(२०१४). स्वच्छता के समाजशास्त्र का स्वरूप. दिल्लीः कल्याण पब्लिकेशन।

VIII. Mandalia, N. (2017). Sociology of Sanitation. Surendranagar: Vidhya Darshan.

सामयिक

I. अयंगर, सुदर्शन. गांधीजी और स्वच्छता. योजना, अक्टूबर-२०१४. पृ. नं. २३ से २६

II. धर्माधिकारी, चंद्रशेखर. कचरा सिर्फ सड़क पर नहीं होता, सर्वोदय प्रेस सर्विस, नवंबर २०१४

वेबसाइट

I. https://www.gandhiheritageportal.org/

II. http://hindi.indiawaterportal.org/

****

डॉ. विपुल सी. रामाणी

संशोधन मददनीश

आदिवासी शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान्

गूजरात विद्यापीठ

अहमदाबाद

Copyright © 2012 - 2018 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat